ने रेजोल्यूशन और बिल इन दोनों को एक मे मिला दिया है । मैं आपके जरिये उनसे अर्ज करना चाहता हू . . .

श्री सभापति : आप तो कह चुके ।

श्री राजनारायण : हम अपने ऊपर चेक नही रखना चाहते । कौल साहब, रेजोल्यूशन और बिल को एक मे न मिलाये ।

श्री महेश्वर नाथ कौल : नही, मैंने नही मिलाया ।

श्री राजनारायण : यह रेजोल्यूशन है और अगर इस हाउस से रेजोल्यूशन पास हो जाता है, तो गवर्नमेंट को इस हाउस से पासशुदा रेजोल्यूशन को एक्सेप्ट करना होगा प्रेसिडेंट को देखना होगा । हमारे लिये कही इसका कोई आबलिगेशन नही है कि लोक सभा को यह कहें कि लोक सभा इसको एप्रूव करे । सारा कांस्टीट्यूशन देख लिया जाए । I am ready to discuss the thing.

श्री सभापति मेरे खयाल में जरूरत से ज्यादा बहस हो गई हैं वक्त से पहले हो रही है । मैने तो कहा है कि इस मामले एक पर इनडिपेंडेंट रेजोलयूशन माननीय सदस्य भेज सकते हैं । जो साहबान भेजना चाहते हैं और जिन लफ्जों में भेजना चाहते है भेजे, मैं देखूगा कि एडमिट कर सकता हू या नही कर सकता हू और अगर उसमे एकाध शब्द को बदलने की जरूरत होगी, तो वह कह दूगा कि ऐसा बदल दिया जाय, उस पर देखूगा कि एडमिट करू या नही । आप जो भेजना चाहते है, वह मेरे पास भेज दे ।

श्री राजनारायण मैने एक भेज दिया है ।

श्री सभापति : मै और सदस्यो से भी कहता हूं कि वह भेजना चाहे तो भेज दे ।

RE. A POINT OF PRIVILEGE

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, अब हमारा सवाल यह है कि . .

श्री सभापति : इसमे नही ।

श्री राजनारायण : इसमे नही । I was in possession of the House when . . .

MR. CHAIRMAN: You seem to be in eternal possession of the House.

MR, CHAIRMAN: You seem to be in eternal possession of the House.

श्री राजनारायण उस दिन जब इस पर बहस हो रही थी तो सदन की बैठक उठ गई और डिप्टी चेयरमैन साहिबा ने कहा हम उठ रहे है, दूसरा दिन मिलेगा । चागला साहब से इस सम्बध मे मै सवाल कर रहा था । अब मुझे वह सवाल फिर करना है । छागला साहब 4 सवालो का उत्तर नही दे पाए, इसलिये मै आपके जरिये चागला साहब से पूछना चाहता हूं कि स्वेतलाना को *(Interruption)* जरा सुना जाय।

SHRI M. M . DHARIA (Maharashtra): Sir, on a point of order . . .

श्री राजनारायण सरकार की ओर से . . .

SHRI M. M. DHARIA . . . . may I know under what rules are we having this discussion by Mr. Rajnarain at this hour?

SHRI RAJNARAIN: I am doing everythink according to the rules.

SHRI M M. DHARIA: This is not at all according to rules.

MR. CHAIRMAN: This is not proper.

श्री राजनारायण : तो आप हमको कह दे । मै तो अर्ज कर रहा हू कि मै सदन के पजेशन मे था । उस दिन की प्रोसीडिंग्ज को देख लिया जाय । देखिये धारिया साहब आप भी कानून समझें, हमको भी समझाए । मैं

[श्री राजनारायण]

चेयरमैन साहब के जरिये यह अर्ज कर रहा हूं कि सदन में बेकार हल्ला मत करें आप लोग। प्रोसीडिंग्ज यहां लिखी हुई है, प्रोसीडिंग देख ली जाय। स्वेतलाना से संबधित क्वेश्चन्स हो रहे थे। वह फाइनल नहीं हुआ था।

श्री सभापति : देखिये राजनारायण जी, आप मुझ से मिल लीजिए और इस बात को मुझे समझा दीजिए। मै इस वक्त प्रोसीडिंग्ज देख नही सकता हू, मझे दूसरे काम करने हैं।

श्री राजनारायण : इसलिये मे आपसे अर्ज कर रहा हूं कि इसी के लगे आप मौका दीजिए कि वे जवाब दे।

श्री सभापति : मैं उनको जवाब देने का मौका नही दे सकता। वे आपको कोई जवाब नही दे सकते, जब तक मैं प्रोसीडिंग्ज न पढ़ लू। मुझे मालूम नहीं था कि आप हाउस के पजेशन मे थे। आपका पजेशन में रहना बहुत ही मुसीबत मालूम होता है। I now go on to the next item.

श्री राजनारायण श्रीमन, मै आपसे इजाजत लेकर इस सदन को सूचित कर रहा हू कि चागला साहब ने जो गलत बयानी की है, उस पर विशेषाधिकार का सवाल हमारा उठेगा। हम नोटिस दे रहे है नोटिस! देखिये दो तरीके है। जो चीज "इन दि आई आफ दि हाउस", सदन के सामने, जो चीज घटती है, उसका प्रोसिजर यह है, प्रोसीडिंग से . . .

श्री सभापति : नही। आप मुझसे मिलियेगा।

श्री राजनारायण : श्रीमन, इसमें आपसे मिलने की जरूरत नही है। प्वाईन्ट सुन लया जाय। मै ऐसी कोई बात नही कह रहा, हू जो आउट आफ पोइन्ट हो। मेरी अर्ज यह है कि जो घटना, जो इन्सिडेंट, इस सदन में, इस हाउस में, घटेगा, उसके बारे मे "डाउनराइट" प्रिविलेज मोशन होना है, तो उसके लिये चेयर से मिलने की कोई जरूरत नही होनी है या कोई ऐसी घटना होती है, जिसके बारे में चेयर को एसरटेन करना होता है कि इसमे कहा तक दम है, कहा तक ताकत है, तो वह अपने चेम्बर मे मेम्बर को काल करता है। हमने इस सदन मे चागला साहब को कहा था कि डा० राम मनोहर लोहिया ने पब्लिक स्टेटमेंट किया है इलाहाबाद में . . .

श्री सभापति : इस वक्त आप क्या कर रहे है क्यों आप प्रिवलेज मोशन मूव कर रहे है ?

श्री राजनारायण : हा, मै प्रिवलेज मोशन मूव कर रहा हू। चागला साहब ने . . .

श्री सभापति : मैने आपको इजाजत नही दी है, प्रिवलेज मोशन के वास्ते।

श्री राजनारायण : मै आपको नोटिस दे रहा हूं।

श्री सभापति मै नही जानता था कि आप यहा मुझे नोटिस देंगे। आप मुझे यहा नोटिस न दें।

श्री राजनारायण . मेरी अर्ज सुन ली जाए। हम अगर आउट आफ वे रहेंगे और आप कहेंगे तो हम बैठ जायेगे। मुझे जो भी आज्ञा होगी, मानूगा, । मै आपको केवल चेयरमैन ही नही मानता हू . . .

श्री सभापति : मेरी इच्छा की पूर्ति करा लेते है।

श्री राजनारायण . . . . हा, हम इच्छा की पूर्ति करा लेते है। आपका हुक्म मानने में हमें दुःख होता है, हम आपकी

ख्वाहिश की पूर्ति करते है। हमने इस सदन मे इस बात को अर्ज किया कि डा० राम मनोहर लोहिया साहब रस्पेक्टिबल आदमी है, पार्लियामेंट मे दल के नेता है, उन्होने यहा तक कहा कि यहा स्वेतलाना हमको मास्को मे मिल चुकी है, वहो इलाहाबाद मे गई और डा० लोहिया साहब से . . .

SHRI M. M DHARIA On a point of order We do not know it. If a privilege is to be raised, under Rule 187 it is very clear that subject to the provisions of these rules, a Member may, with the consent of the Chairman, raise a question involving a breach of privilege Whether the consent has been obtained by Mr Rajnarain, we do not know

MR CHAIRMAN He has given notice of a privilege motion, but he is raising the point now. Since Mr Chagla is here, he can explain it and the matter may end That is why he is doing it

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मै यह अर्ज कर रहा था कि मैंने इसी सदन मे चेयर की इजाजत से चागला साहब और पूरे सदन के सम्मानित सदस्यों को बता दिया था कि स्वेतलाना इलाहाबाद मे डा० राम मनोहर लोहिया से मिली थी, डा० राम मनोहर लोहिया कोई मामूली आदमी नहीं है—यह गाधी जी का वाक्य है, मेरा नही है। मै तो कुछ और कहता। और इसलिये डा० लोहिया ने पब्लिक स्टेटमेंट किया कि स्वेतलाना को जिस ढग से यहा से जाना पडा वह उचित नही है, वह भारत के सम्मान के विरुद्ध है। एक कोमल स्त्री के साथ जबर्दस्ती की जा रही है। यहा तक बात स्वेतलाना ने कही है कि मुझे लोग यहा रहने नही दे रहे है। डा० लोहिया ने कहा "You fight it out" उसने कहा "Life is not so simple" यह स्वेतलाना का जवाब था। हम लोगो को इसी तरह की एक घटना का और पता है इसलिये लोहिया साहब इस मसले मे ज्यादा जोर नही दे पाये। इससे पहले मार्गो स्किनर का मामला हो चुका है। मार्गो स्किनर हमारे एक मन्थली मैगजीन "मैनकाइन्ड" मे एडिटर थी और उनको पुलिस जबर्दस्ती उठाकर अमेरीका ले गई। उससे पहले जब लालबहादुर जी यहा गृह-मत्री थे, उन्होने हमसे कहा था कि सात दिन का मौका दीजिए मैं देखूगा। लेकिन जैसा मैंने कहा इसी बीच उनको जबर्दस्ती उठा कर यहा से ले गये। तो डा० लोहिया के मन मे था कि उसको भी बुला कर रखे। लेकिन इस खयाल से कि शायद सरकार उसी तरह से जबर्दस्ती करे उन्होने कहा "यू फाइट इट आऊट" और उसने कहा "लाइफ इज नाट सो सिम्पल"। श्री चागला साहब इस बात की जानकारी ले, सरकार मे सबधित मत्रियो से और सरकार के दूसरे लोगो से कि क्या स्वेतलाना से यह नही कहा कि यहा की जलवायु, यहा की आबहवा, गरम है ? आप एक सर्द मुल्क की रहने वाली है। यहा आपको बहुत तकलीफ होगी। हमारा और रूस का आपस मे रिश्ता खराब होगा। दूसरे, जो आपके बच्चे है, इस वक्त रूस मे है, आप यहा रह जायगी तो उन बच्चो का क्या होगा ? तीसरी बात, शुरू शुरू मे तो अगर कोई इस तरह आ कर के शरणार्थी के तौर पर रहता है तो लोग उस पर ज्यादा खयाल नही करते मगर आप स्टीलिन की पुत्री हुई, कुछ समय आप रहने लगेगी तो उसके बाद अनेक प्रकार की डिफिकल्टीज, अनेक प्रकार की चीजे आयेगी। यह सब सरकारी प्रवक्ता लोगो के जरिये स्वेतलाना को बराबर कहा गया और सरकारी प्रवक्ता के कहने पर रूसी एम्बेसी ने उसका जो वीसा का पीरियड था उसको एक्सटेन्ड किया। यह क्यो एक्सटेड कराया गया क्योकि स्वेतलाना कहती थी मैं यहा रहूगी। लेकिन यहा के लोग कहते थे, नही तुम यहा से जाओ, तुम्हे यहा से कई बातो के कारण जाना जरूरी है।

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI M. C. CHAGLA): Sir I protest against this abuse of the procedure of the House. The day before yesterday I faced this House for one hour. The Deputy Chairman allowed the discussion to go on for one hour. I had tried to answer every question that was put. Now, my friend, Mr. Rajnarain, is trying to protract the debate by asking further questions and carrying on the discussion. I do not know under what procedure this is being done. If there is a privilege motion, I am prepared to face it. If I have made any incorrect statement, I am prepared to explain it, but now to continue the debate which ended the day before yesterday really I do not know under what rule this is being done.

श्री राजनारायण : ठीक है, मैं खत्म कर रहा हू । मुझे आपके जरिये एक ही अर्ज करनी है श्री चागला से कि उन्होंने इस सदन को गुमराह किया है, जो हमने फैक्ट्स दिये हैं, उनको छिपाने की कोशिश की है और जो बयान निकाला गया है वह गलत है। हम प्रिवलेज मोशन लिख कर देंगे ।

MOTION OF THANKS ON THE PRESIDENT'S ADDRESS—*contd.*

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I would like to make the first point that winds of change are blowing in India and the Congress in its *post mortem* of the election has not yet come to realise what changes have already take place or what changes may take place in the future. The entire Address of the President does not reflect the change in the correlations of the forces in India because the people of India have rejected this reactionary Congress caucus that has been ruling in India for the last 20 years, a reactionary caucus that did not and do not serve the interests of the people, that did not and do not intend to serve the interests of the people, a reactionary caucus that serves and wants to serve the interests of a narrow stratum only, a section of the bourgeois landlords and the foreign imperialists. It has been in their service.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. P. BHARGAVA) in the Chair.]

The Address of the President does not reflect any change; it only signifies that they want to proceed along the old beaten path. It is true that the people of India are on the march; it is true that they have not yet found out the alternative path; it is also true that utilising the discontent of the people against the Congress, the Swatantra Party has been able to secure a good amount, a sizeable amount, of the electorate, on to their side, to swing a good portion of the electorate on to its side. That is a reactionary party. In rejecting the Congress, the people have not yet found the democratic forces and a democratic path; a portion of the electorate has gone over to the Swatantra Party or to the Jana Sangh: The Swatantra Party is for the untrammelled operation of the vested interests and they want to openly plump for the protection of the foreign imperialists like any other satellite country in Latin America. Theirs is an open declaration. They say, we must openly align and espouse the cause of the imperialists and be under their protection. The Congress only wants to do the same thing, is doing the same thing—it is hobnobbing with the imperialists, surrendering the national interests to the imperialists, aligning themselves with the imperlialists, throwing overboard the policy of non-alignment which they are mouthing merely in words, of which perhaps nothing remains in fact. Only under a smoke-screen of non-alignment, they are precisely pursuing their policy in order to hoodwink the people. The Swatantra Party says, let us do it openly. The Congress says, no, let us do it under a screen, behind the screen, so that the people can be bluffed and hoodwinked. That is the difference between the two parties.

Now, I would like to make this point again that the President's Address is a petty, philistine rigmarole containing nothing new. It is said that